THE HERALD of Christian Science
informal translations from the publications of the Christian Science Publishing Society

सही जवाब से शुरू करो

Start with the Right Answer

Christian Science Journal

Author :– Kim Korinek
Vol. 125, No. 11, November, 2007

क्रिश्चियन साँयस एक साँयस है। मूल आध्यात्मिक सिद्धान्तों, दिव्य कानूनों पर आधारित क्रिश्चियन साँयस को जब व्यवहार में लाया जाता है–यह स्वास्थ्य प्रदान करती है। मैं क्रिश्चियन साँयस को गणित के अभ्यास तथा प्रयोग के समान मानती हूँ। इस प्रकार गणित के सवाल को निकालने की तरह क्रिश्चियन साँयस को जब किसी चुनौती के लिए प्रयोग में लाया जाता है, आप सही जवाब से शुरू करते हो।

उदाहरण के तौर पर गणित के किसी भी सवाल में आप जानते हो कि जमा के सिद्धान्त विश्वसनीय, समझने योग्य होते हैं और जब इन्हें प्रयोग में लाया जाता है तब यह सही समाधान प्रदान करते हैं। इस तरह जब आपके पास गणित का सवाल सामने आता है जिस का जवाब इस तरह है: 5+7= 10.75 आप क्या करते हो?

1. जानने की कोशिश करते हो कि यह गलत जवाब यहाँ तक कैसे पहुँचा?
2. अनुमान लगाते हो तथा देखते हो, दूसरे अंक क्या कर सकते हैं और आशा करते हो कि आप सही जवाब तक पहुँच पाओगे?
3. गलत जवाब को मिटा देते हो, जमा के सिद्धान्त को प्रयोग में लाते हो और सही जवाब निकाल लेते हो?

यकीनन, हम सब तीसरे का चुनाव करेंगे।

इस दृष्टांत को सामने रखते हुए और इसे ऐसी स्थिति में प्रयोग में लाते हुए, जिसे उपचार की जरूरत थी, मुझे भी सफलता प्राप्त हुई। मैंने एक सेवाएँ प्रदान करने वाली संस्था में संचालक का पद स्वीकार किया, एक जाने वाले संचालक की जगह जिसे बहुत प्यार मिलता था। पुराने संचालक की सहायिका अब मेरी सहायिका बन गयी। वह अपने पुराने बॉस को बहुत प्यार करती थी और काम के पहले ही दिन से उसके स्वभाव और प्रतिक्रियाओं ने यह स्पष्ट रूप से बता दिया कि वह मुझे पसन्द नहीं करती थी।

* जो शब्द बड़े अक्षरों में लिखे गये हैं वह परमेश्वर के समानार्थक शब्द हैं।

For this translation in English and other translations in [language], please see http://translations.christianscience.com

Translation © 2011 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 100 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

मैंने क्या नहीं किया:

1. पता लगाने की कोशिश की कि कैसे कोई इस तरह के स्वभाव के साथ यहाँ तक पहुँच सकता है।

2. उसे जीतने के लिए विभिन्न प्रकार की योजनाएँ आजमाने की कोशिश की आशा करते हुए कि मुझे सही योजना मिल जाए।

इसके बाद मैनें जो किया:

3. सही सिद्धान्त का प्रयोग किया और सही जवाब पा लिया।

सही जवाब से शुरू करो

सबसे पहले, मैं आध्यात्मिक अन्तर्ज्ञान, अनुभव और क्रिश्चियन साँयस के अध्ययन से जानती थी कि परमेश्वर ने हर एक की अपने रूप तथा प्रतिरूप में रचना की है और इस लिए उसने हम सब को अच्छा बनाया है। साथ ही मैं जानती थी कि हर एक चीज जिसकी उसने रचना की है, उसे वह प्राकृतिक समन्वय और अच्छाई में बनाए रखता है। परमेश्वर हम सब को संचालित करता है। समन्वय परमेश्वर की सत्ता से आता है,–सर्वव्यापी और सर्वज्ञ सिद्धान्त से। कुछ भी इस समन्वय में बाधा नहीं डाल सकता।

परमेश्वर के संचालन को मान्यता दें और कठिनाई को मिटा दें

बिल्कुल शुरू से ही, मेरा सहायिका के साथ संबधों में असमन्वय नजर आता था। पर मैंने तर्क किया कि परमेश्वर के बच्चे होने के नाते, हम स्वाभाविक तौर पर समन्वय के साथ जुड़े हुए हैं। अस्वाभाविक तथा परमेश्वर के विपरीत होने के नाते, असमन्वय का कोई स्थायी प्रभाव नहीं हो सकता। चाहे कठिनाई किसी भी तरह की क्यों न दिखाई दे, इसके पास सम्बन्धित व्यक्ति के साथ जुड़ने की, किसी को भी प्रभावित करने की, और निरन्तर बढ़ते रहने की शक्ति नहीं होती। परमेश्वर हर समय अपने सभी बच्चों को समन्वय से संचालित करता है।

सिद्धान्त को प्रयोग में लाओ

मैं इस सिद्धान्त, दिव्य कानून को प्रयोग में लाई कि परमेश्वर के बच्चे एक दूसरे के साथ द्वंद में नहीं होते। मैंने अपनी नई सहायिका के लिए चुपचाप और निष्ठा से प्रार्थना की, अच्छे विचारों के सिवाए बाकी सभी को नकारते हुए। मैं अपने विचारों के दरवाजे पर खड़ी हो गई जैसे कि मेरी बेकर ऐडी ने साँयस एण्ड हैल्थ में सुझाया: ''सोच के दरवाजे पर दरबान की तरह खड़े हो जाओ'' उसने लिखा। ''ऐसे परिणामों को स्वीकारते हुए जैसा कि तुम शारीरिक प्रभावों में महसूस करने की इच्छा रखते हो, तुम अपने आप को समन्वय से नियन्त्रित कर लोगे'' (पृष्ठ 392)।

Translation © 2011 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 100 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.

सही जवाब निकालो

मैंने इस स्थिति का प्रार्थना से समाधान करने का निर्णय लिया जब तक कि मैं निश्चित रूप से विश्वस्त नहीं हो गयी कि केवल परमेश्वर मेरे तथा उस औरत के कैरियर के हर पहलू को नियन्त्रित करता है। द्वंद का समाधान करने का सही जवाब था अपनी सहायिका को निरंतर तथा आशा से आध्यात्मिक प्रेम करना। मैंने परिणाम पर चिंतन करने को भी नकारा। इस के बजाए, मैंने सारा ध्यान प्रेम करने पर ही केन्द्रित किया।

उपचारक परिणाम

एक दिन मेरी सहायिका मेरे पास आई और कहा कि उसने महसूस किया है कि मैंने उसके पुराने बॉस से भिन्न रूप से व्यवस्था की है और इसलिए उसने समझा कि मुझे एक ऐसी सहायिका की जरूरत थी जो नए तरीकों में सहायता कर सके। वह दिल से मेरी सहायता करना चाहती थी और उसने अपने पिछले व्यवहार के लिए माफी माँगी। इसके परिणामस्वरूप एक खुशहाल, लाभदायक तथा आनन्दित कार्य सम्बन्ध बना जो कि सालों तक रहा।

मेरी बेकर ऐडी ने इस प्रश्न के लिए यह सहायक मार्गदर्शन दिया कि आप उपचार कैसे करते हो? उसने कहा, ''सच्चाई से भरे तर्क–वितर्क जो आप लगाते हो और विशेषतयः सत्य और प्रेम की प्रेरणा से, जिसे आप आमन्त्रित करते हो, आप बीमार का उपचार कर दोगे'' (साँयस एण्ड हैल्थ, पृष्ठ 418)।

सच्चाई से भरा तर्क–वितर्क सही जवाब से शुरू हुआ : कि हम सब परमेश्वर के बच्चे हैं, उसके द्वारा समन्वय से संचालित हैं और इसलिए एक दूसरे के साथ द्वंद में नहीं रह सकते। मैंने पाया कि जब मैं इस सही जवाब से शुरू करती हूँ तो मैं हर परिस्थिति के अंत मे शान्ति, समन्वय तथा कुशलता पाती हूँ।

Translation © 2011 The Christian Science Publishing Society
This translation has been performed by Mother Church members in the Field and made available by agreement with The Christian Science Publishing Society. You may reproduce up to 100 print copies of this Article. You may not sell or reprint this Article in another publication without permission of CSPS. You may not post or embed this Article on other websites; instead please link to the Article on the CSPS website.